SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

लोहार पिट्टा (गाड़िया लोहार): समाज, संस्कृति एवं परिवर्तन

करन सिंह, (Ph.D.) समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, पिछोर, जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

करन सिंह, (Ph.D.) समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय छत्रसाल महाविद्यालय, पिछोर,
जिला शिवपुरी, मध्यप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 21/11/2022
Revised on : -----
Accepted on : 29/11/2022
Plagiarism : 00% on 21/11/2022

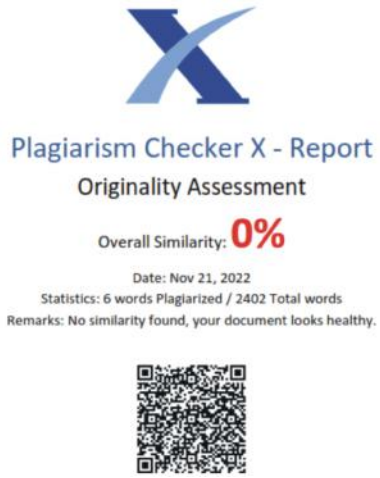

शोध सार

लोहार पिट्टा अर्थात् गाड़िया लोहार एक घुमन्तू समुदाय है जो राजस्थान से निकल कर देश–प्रदेश में विचरण कर रहे है। महाराणा प्रताप के प्रति दृढ़ प्रतिज्ञाओं के पालन में आज भी इनका जीवन चलायमान है। इनकी संस्कृति, समाज, मान्यताऐं विशिष्ट हैं। ये लोग अपनी जीवन शैली में अन्य समुदाय के हस्तक्षेप को अनुमति नहीं देते है। शिक्षा, स्वास्थ्य, कल्याणकारी योजनाओं से इतर अपनी गाड़ी में साच जीवन के विभिन्न प्रतिमान को लिये हुये अपने 'लोहारी कौशल' से आज भी आजीविका कमाते है। वर्तमान परिवर्तनशील दौर ने इन्हें भी परिवर्तित करने का प्रयास किया है लेकिन ये आज भी अपनी मूल पहचान व समृद्ध संस्कृति लिये हुऐ हैं।

मुख्य शब्द

लोहार पिट्टा, गौत्र, संस्कृति, प्रतिज्ञाऐं, लोहारी.

वन सम्पदा, जाति धर्म व सांस्कृतिक विविधता की अहम पहचान रखने वाला देश का हृदय प्रदेश 'मध्यप्रदेश' में ऐसी कई घुमक्कड़ जातियां निवासरत हैं जिनकी वास्तविक जीवन शैली व पहचान को उजागर करने के लिए शासन–प्रशासन द्वारा संगठित प्रयास किये जा रहे हैं। यह लेख शिवपुरी जिले के पिछोर व खनियांधाना जनपद के आसपास निवासरत लोहार पिट्टा (गाड़िया लोहार) घूमक्कड़ समुदाय के विशेष सन्दर्भ में है।

अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य गाड़िया लोहार समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक प्रतिमानों, मान्यताओं, परम्पराओं और वर्तमान में आ रहे परिवर्तन व बदलावों की पहचान को उजागर करना है। इस शोध अध्ययन की परिकल्पनाओं के माध्यम से गाड़िया लोहार जाति के निम्नलिखित पहलुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है:

- गाड़िया लोहार की जीवन शैली विशिष्ट एवं पारम्परिक है।

- इनकी सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि महत्वपूर्ण है।
- इनकी आस्था, मान्यताऐं व आर्थिक जीवन विशिष्ट है।
- परिवर्तन की प्रक्रिया ने इन्हें कितना परिवर्तित किया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन पिछोर व खनियांधाना जनपद के आसपास सड़क किनारे विभिन्न 'डेरों' या 'चक' या 'मोहल्लों' में निवासरत गाड़िया लोहार जाति से संबंधित है। इस क्षेत्र के बरबटपुरा, वार्ड–03, नया चौराहा, नया चक्का इत्यादि इनके प्रमुख मोहल्ले है जिनमें इनकी जनसंख्या लगभग 500–600 है। इनकी जीवन शैली व अन्य महत्वपूर्ण पक्षों की जानकारी एकत्रित करने हेतु सहभागी अवलोकन, असहभागी अवलोकन, साक्षात्कार, स्थानीय पत्रकार, पड़ोसीजन, समाजसेवी व प्रशसनिक अधिकारियों – कर्मचारियों से शोधार्थी द्वारा प्रत्यक्ष संवाद स्थापित कर वास्तविक सूचनाओं का संकलन किया गया। एकत्रित जानकारी शोधार्थी द्वारा गाड़िया लोहार के मोहल्लों में स्वयं उनसे बैठकर उनकी जीवनशैली, समाज–संस्कृति को समझकर प्रस्तुत किया गया है।

शोधार्थी द्वारा गाड़िया लोहार के बुजुर्गों से प्रत्यक्ष संवाद करने पर उनके द्वारा बताया गया कि गाड़िया लोहार की उत्पत्ति एवं निवास राजस्थान के मेवाड़ से माना जाता है। यह एक ऐसी अनोखी घुमन्तू जाति है जो अपना घर स्थाई रूप से नहीं बनाती बल्कि कलात्मक बैलगाड़ी ही इनका चलता–फिरता घर है व लोहे के औजार एवं सामान बनाने में माहिर होते है तथा अपनी आजीविका भी लोहे को कलात्मक रूप देने से चलाते हैं, इसलिये इन्हें लोहार पिट्टा या गाड़िया लोहार कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि महाराजा प्रताप की सेना में गाड़िया लोहार की महत्वपूर्ण भूमिका रहती थी, चाहे युद्ध हो या फिर युद्ध के लिये लोहे के औजार, साजो–सामान, बनाना हो। इनका शारीरिक गठन सामान्य होता है। स्त्री–पुरूषों से पीछे नहीं रहती। इनके पुरूष धोती–बड़ी, कुर्ता, कांथ, कोटी, पेन्ट–शर्ट तथा कानों में सोने–चांदी के कुण्डल–बाटी, हाथ में चूरे इत्यादि पहनते हैं, वहीं महिलाऐं कलात्मक पहनावा पहनती है। छींटदार कडाईवाला लंहगा, सितारों से जड़ी कुर्ती एवं छोटी चुदंरी सर पर डालती है। गले में चांदी का कड़ा–हसली, हाथों में भुजाओं तक कांच, लाख, सीप व तांबे की चूड़ियां, नांक में लंबी नथ, बाली, पांव में भारी–भारी चोड़ी के कड़े, कानो में पीतल–चांदी–सोना की बालियां पहनती है, सिर के बालो को अलग–अलग चोटियों में बांधकर रखती हैं जिनमें कौडियों की माला लपेटती हैं, कमर में कांचली या करधनी पहनती है। ये अपने बदन पर चित्रकारी रंगों से सजी है, हाथों में गुदना भी गुदवाती हैं जो उनकी विशेष पहचान मानी जाती है।

इनके मोहल्लो में देखा गया कि इनके घर मिट्टी की छोटी दीवार जिनपर तिरपाल ताने हुऐ तम्बुओं के घर है तथा परिवार के कई सदस्य अपनी गाड़ियों में भी तम्बू तानकर रहने की व्यवस्था करे हुऐ है। इनकी गाड़ी मे ही इनकी जीवन थैली के कई रंग मौजूद है तथा घरों की छोटी दीवारों पर ही थोड़ी रंगकारी की चित्रकला दिखाई दी। पिछोर व खनियाघाना दोनो ही जनपद के आसपास निवासरत गाड़िया लोहार जो कई दशकों से यहीं डेरा डाले हुऐ हैं लेकिन आजीविका के लिए प्रत्येक परिवार के कुछ सदस्य मिलकर आसपास के गांवों में जाकर रहने लगते है तथा लोहे के विभिन्न औजार सामान बनाकर कड़ाई, हसिया, तवा, छैनी, चाकू, कुल्हाड़ी एवं कृषि औजार बनाकर बेचते है जिससे उनका जीवन–यापन होता है।

महाराणा प्रताप की सेना में गाड़िया लोहारों ने यह प्रण लिया था कि जबतक मेवाड़ मुगलों से आजाद नहीं जाता और महाराणा गद्दी पर नहीं बैठते, तबतक हम कहीं भी अपना घर नहीं बताएगें और इसी वचन के पक्के गाड़िया लोहार आज राजस्थान से निकलकर देश –प्रदेश के प्रत्येक जिले में डेरा डाले हऐ है। इनका गाड़ी में ही घर होता है और लोहारी इनका प्रमुख पेशा है इसलिये इनको 'गाड़िया लोहार' कहा जाता है तथा लोहा पीटकर विभिन्न औजार, सामग्री बनाते है इसलिये इन्हें कई जगह 'लोहार पिट्टा' भी कहा जाता है। आज वे दर–दर की ठोकरें खाते हुऐ घुमन्तू जीवन जी रहे हैं लेकिन इनकी संस्कृति आज भी विशिष्ट है, यह अन्य समुदाय से अलग ही रहते हैं। इनकी रिश्तेदारियां स्वयं के समुदाय में ही रहती है। अब भी इनकी बोली, भाषा में मेवाड़ की ही महक आती है। पहनावा और पारिवारिक ढांचा अब भी वही है।

इनके परिवारों में कई बुजुर्गों द्वारा बताया गया कि बच्चों का जन्म गाड़ी में ही होता अर्थात् छोटे कस्बों में

सड़क किनारे रहने वाले गाड़िया लोहार आज भी प्रसव के लिये अस्पतालों में नही जाते है तथा शिशु के 21 वें दिन उपरांत पीठ पर गर्म छड़ दागने की रस्म की बात की तो उन्होने कहा कि हमारे मोहल्ले में ऐसी कोई रस्म नहीं होती। इनमें ज्यादातर हिन्दुओं के अन्य समुदायों के रीति–रिवाज पनपने लगे हैं, बच्चा–बच्ची में कोई भेद नहीं करने तथा जन्म के समय छोटे–छोटे पारिवारिक उत्सव भी मानते हैं। गाड़िया लोहार आज भी बचपन में ही बच्चों की सगाई कर देते हैं। इनमें गौत्र प्रथा भी प्रचलित है। यहां के गाड़िया लोहारों में प्रमुख गोत्र– आड़ा, चौहान, रावत, राना, चौकड़ा इत्यादि है तथा इनके समुदाय 20 कड़ी, 16 कड़ी के लोहार इत्यादि में भी विभक्त है।

अवलोकन द्वारा पाया गया कि इनके परिवार संयुक्त प्रकार के हैं जिसमें सबसे बुजुर्ग व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है। परिवार में स्त्री–पुरूष दोनो को महत्व दिया जाता है, कई निर्णयों में मुखिया परिवार की महिलाओं से भी विचार–विमर्श करते हैं। इनमें दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा इत्यादि नहीं पाई जाती तथा भ्रूण हत्या भी नहीं होती। अपनी गौरवमयी संस्कृति व परम्पराओं का आज भी पालन करते हैं। परिवार में कोई भी उत्सव, नामकरण, त्यौहार, विवाह इत्यादि स्वयं तय करते हैं अर्थात् किसी से मुहूर्त्त नहीं निकलवाते। विवाह के समय समुदाय के सभी लोहार तथा दूर–दराज के नाते रिश्तेदार भी आते हैं इसका प्रत्यक्ष उदाहरण शोधार्थी द्वारा दिनांक 17.09.2021 को इनके समुदाय में आयोजित विवाह कार्यक्रम में देखा गया। यह विवाह बरबटपुरा (पिछोर) में हुआ, यहां बारात 13 कि.मी. दूर राजापुर गांव से सायं को .....। दोनो तरफ के गाड़िया लोहार (स्त्री–पुरूष–बच्चे) अपने पारम्परिक परिधान में देखे गए। रिमझिम बारिश का मौसम और मोहल्ले में बाजारू टेन्ट भी लगा, सायं को बारात आते ही खाना खिलाया गया फिर मण्डप के नीचे दूल्हा–दुल्हन के फेरों की रस्म तथा वरमाला हुई, सभी मेहमानों द्वारा टीका लगाया गया एवं दूल्हा–दुल्हन को छोटे–पूरे उपहार भी दिये गए। हालांकि इनमें वर पक्ष की ओर से वधू पक्ष को सहयोग के रूप में आर्थिक सहयोग देने की बात सामने आई लेकिन इस सहयोग को वधू पक्ष विवाह उपरांत वर पक्ष को रस्मों के साथ लौटा देते हैं। उपहार में सोना–चांदी के आभूषण भी दिये जाते हैं। रिश्तेदारियों के माध्यम से आज भी ये लोग राजस्थान आना–जाना रखते है।

गाड़िया लोहारों में खान–पान शाकाहारी–मांसाहारी दोनो पाया जाता है। सामान्यतः वे सिल–बट्टे पर चटनी मसाले बनाते है तथा सब्जी, रोटी में दाल, बेसन, हरी सब्जी, चना, मसूर, अचार,गेहूं, बाजरा,जोड़ई इत्यादि तथा सप्ताह में दो–तीन दिन मुर्गे, बकरा, मछली, कछुआ, तीतर, बटेर इत्यादि का मांस बनाते है। कभी–कभी पकवान भी बनाते है। इनमें ज्यादातर त्यौहार हिन्दुओं जैसे ही होते हैं– रक्षाबंधन, होली, दिवाली, दशहरा, गणेश पूजन, दुर्गा पूजन, नागपंचमी, संक्रांति के अतिरिक्त इनकी विशेष आस्था निहाल देवी (राजस्थान), बाबा रामदेवराय, ठाकुरबाबा, जिंद, कुलदेवता इत्यादि विशिष्ठता इनको अन्य समुदायों से अलग पहचान दिलाती है। पर्व–त्यौहार, आस्था व विवाह, उत्सव इत्यादि सांस्कृतिक कार्यक्रमों को स्त्री–पुरूष सज–धजकर पारम्परिक रूप से ही मनाते है।

मनोरंजन के लिये इनमें मिट्टी के खिलौने, चौपट, गुट्टा, टोल, सांप–सीढ़ी, अष्टा–चंगा, दौड़ गिल्ली–डण्डा, बाजारू खिलौने, मोबाइल, फोन, रेडयो, टीवी, इत्यादि का उपयोग करते हैं, कई घरों में डीटीएच भी देखी गई। इनमें शिक्षा का स्तर ठीक नहीं है अर्थात् धुमन्तू प्रकृति होने से एक जगह स्थायी नहीं रहते इसलिये बच्चों की शिक्षा सही से हो पाती, गांव–कस्बो के बाहर डेरे होने से स्कूल भी दूर पड़ते हैं। इनके कई सदस्य केवल अपना नाम मुश्किल से लिख पाते हैं।

गाड़िया लोहार कलात्मक और सांस्कृतिक रूप से अन्य समुदायों से विशिष्ट पहचान रखते हैं लेकिन आर्थिक रूप से सामान्य एवं कमजोर है। इनका पारम्परिक व्यवसाय लोहारी है अर्थात् लोहे से विभिन्न औजार, उपकरण, कृषि, उपकरण व अन्य सामग्री बनाकर बेचते हैं जिसके लिये इन्हें कई दिनों के लिये अलग–अलग जगह पर डेरा डालना पड़ता है इसलिये ये घुमन्तू समुदाय की श्रेणी में आते है। कोयले से लोहे को आग में गर्म कर एनर पर रखते हुऐ हथोड़े से विभिन्न रूपों में बदलकर अपनी आजीविका कमाते है। मध्यप्रदेश में इन्हे अनु. जनजाति श्रेणी में माना जाता है। गाड़िया लोहारो का कहना है कि हमारे मोहल्ले के प्रत्येक परिवार से एक दो सदस्य मिलकर कुछ दिनों के लिये अन्य गांवो में लोहारी करने जाते हैं तथा वहीं डेरा डालते हैं एवं स्थान पर भी परिवार के सदस्य

अदला–बदली करते हुऐ आना–जाना रखते है। बारिश के मौसम में बैलगाड़ी इनकी विशेषता है, लेकिन पिछोर क्षेत्र के गाड़िया लोहार के घरो में गाड़ियां तो है लेकिन बैल नहीं है। उनका कहना था कि बैल बेच दिये जब कभी यहां से स्थाई रूप से बसेगें तब खरीदेगें। इनके पास साइकिल और मोटरसाइकिल देखी गई जिनका उपयोग अब ज्यादा करते हैं। इनके डेरों पर कुत्ते, बकरियां, मुर्गे इत्यादि भी देखे गए।

घुमन्तू जीवन जी रहे गाड़िया लोहारो में कई ऐसी मान्यतायें एवं विश्वास है जिनके चलते वे अन्य समुदायों से इतर गांव शहरों के बाहर ही रहना पसंद करते है। कलात्मक व कौशल की दृष्टि से ये बहुत ही विशिष्ट हैं। इनकी परिवार व्यवस्था में स्त्री–पुरूष दोनों ही महत्वपूर्ण है तथा इनके समुदाय में प्रत्येक मोहल्ले की सामाजिक व्यवस्था है अर्थात् किसी भी क्षेत्र के गाड़िया लोहारो में इनके देवी–देवता, आस्था, धर्म, लोक विश्वास तथा मान्यतायें एवं परम्परायें एकाग्र होने से इनकी संस्कृति भी विशिष्ट हो जाती है। समुदाय में इनके मोहल्ले का एक मुखिया कोई वृद्ध या समझदार व्यक्ति होता है जिसकी बातों को सभी गाड़िया लोहार मानते है। इनके मुखिया को पटेल भी कहा जाता है तथा बुजुर्ग महिलाऐं भी न्याय–निर्णय में मुखिया के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इनके डेरों, मोहल्लों में कोई बाहरी समुदाय का व्यक्ति आता है तो ये लोग तुरंत सभी एकत्रित हो जाते है। इनके समुदायों में कोई आपसी विवाद होने पर समुदाय के बुजुर्ग और समझदार व्यक्ति के साथ बैठकर दोनो पक्षों को सुनकर निर्णय लेते हैं, जिसको सभी सदस्य मानते है। किसी बाहरी व्यक्ति से विवाद होने पर ये लोग तुरंत गुस्से में आते हैं तथा सभी लोग मिलकर सामना करते है। समुदाय में किसी भी आपराधिक कृत्य के लिये इनकी ''जातिय पंचायत'' ही अंतिम निर्णय लेती है जो सर्वमान्य होता है। गाड़िया लोहार सामान्य तौर पर कोर्ट–कचहरी, थाना इत्यादि से दूरी बनाए रखते है। इनके समुदायों में किसी प्रकार का औपचारिक संगठन, समिति नहीं पाई जाती बल्कि जातिय पंचायत ही सबसे सशक्त संस्था होती है। समुदाय में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसका सम्मान के साथ आजू–बाजू में ही 'दाहसंस्कार' करते हैं तथा किसी छोटे बच्चे की मृत्यु पर उसे दफनाते है। इस प्रकार की घटना पर ये लोग कोई बड़ा भण्डारा या तेरहवीं नहीं करते बल्कि कन्याभोज का आयोजन करते है।

निष्कर्ष

वर्तमान आधुनिकीकरण, पश्चिमीकरण के दौर में सम्पूर्ण मानव समाज की जीवन शैली परिवर्तित हुई है, वहीं यह घुमन्तू समुदाय अपनी संस्कृति को बनाये रखते हुये इसमें भी कई परिवर्तन देखने मिले। गाड़िया लोहारो की कई मान्यताऐं–प्रतिज्ञाऐं परिवर्तित हो रही है जिनमें सिर पर टोपी नहीं पहनना, पलंग पर नहीं सोना, घर का मकान नहीं बनाना, चिराग नहीं जलाना, कुंऐ से पानी नहीं भरना, कमर में काला नाड़ा बांधना, मृत्यू पर ज्यादा विलाप नहीं करना, कंघे का उपयोग, विवाह में मयूर पंख का उपयोग, मालिश का उपयोग एवं मात्र लोहे को पीटने से जीविका कमाना इत्यादि सभी मान्यताओं को शोधार्थी द्वारा इनके समुदाय की जीवन शैली सूक्ष्मता से समझने पर इनमें परिवर्तन देखने को मिला। आज गाड़िया लोहार सिर पर पगड़ी–फेंटा, खटिया पर सोना, स्थायी पक्का मकान बनाना, आग जलाने में माचिस का उपयोग, कहीं से भी पानी भरना, काले के साथ अन्य रंग का नाड़ा बांधना, मृत्यु पर दुख, कंघे का ज्यादा उपयोग तथा लोहे पीटने के अतिरिक्त इनके डेरो में मुर्गे–बकरियां देखी गई जिनको बेचते भी है। पिछोर जनपद के ये गाड़िया लोहार लगभग 20 वर्षों से यहीं रह रहे हैं तथा अब उनका वोटर कार्ड, आधार कार्ड, बैंक खाता, राशन कार्ड है। गैस सिलेण्डर का उपयोग तथा प्रधानमंत्री आवास योजना से पक्के मकान भी बन रहे है इत्यादि परिवर्तन प्रत्यक्षतः देखे गए। आज इनके पास गाड़िया तो है लेकिन बैल नहीं है क्योंकि कई वर्षों से वे ज्यादा दूर नहीं गए और मोबाइल, मोटरसाइकिल का भी उपयोग करते है।

शासन–प्रशासन के संगठित प्रयास तथा इनके घुमन्तू जीवन को स्थापना प्रदान करने कई योजनाओं, कार्यक्रमों से इनके समूचित विकास के प्रयास निरंतर जारी है, लेकिन कई परिवर्तन अपनाने के बाद भी गाड़िया लोहार अपनी मूल परम्पराऐं एवं संस्कृति को नहीं भूले। आज भी उनके डेरे कुछ–कुछ दिनों के लिये पड़ोसी गांवों में लगते है जहां लोहा पीटकर विभिन्न सामान, औजार, बर्तन बनाना अपनी पैतृक व्यवसाय को जीवित रखे हुये है। वास्तव में देख जाए तो इनका अतीत गौरवमयी एवं संस्कृति अद्वितीय है और आज ये घूमन्तू से अर्द्धघुमन्तू और स्थायित्व की ओर अग्रसर है।

सन्दर्भ सूची

1. गुप्ता एम.एल., *जनजातीय समाज का समाजशास्त्र,* साहित्य भवन पब्लिकेशन, दिल्ली।
2. चौमासा पत्रिका, मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल।
3. जनजातीय समाज, हिंदी ग्रंथ अकादमी, भोपाल।
4. दैनिक भास्कर, मार्च 2022, ग्वालियर, संस्करण।
5. आदिवासी लोककला एवं बोली, विकास अकादमी, भोपाल।

****